चाँदनी

भूमिका

श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ (बेढब बनारसी)

चन्द्र और चन्द्रानन दोनों बरबस कवियों के हृदय पर आक्रमण करते रहे हैं। इन दोनों से जो प्रभावित न हुआ हो, वह कवि नहीं है और जो कुछ भी हो। सजीव हृदय को दोनों ही स्पर्श करते हैं, और स्पर्श से कंपन होता है तो कवि की वाणी या चित्रकार की तूलिका, उसे अपनी भावना के अनुसार मूर्तिमान करती है। कवि का हृदय इतना कोमल होता है कि प्रकृति का सूक्ष्म से सूक्ष्म हास-विलास उस पर प्रतिबिंबित हो जाता है और जब भावुकता का भी यौवन काल हो तो यह प्रतिबिंब अपने आप जगमगाने लगता है।

चाँदनी के गीत भावुक कवि के हृदय की भावुकता के मुखरित रूप हैं। कवि के हृदय ने ज्योत्स्ना के सागर में जैसे-जैसे तरंगें ली हैं, जैसे-जैसे उसकी लहरों पर वह झूला है, वैसे-वैसे अपने भाव को गीत के धागे में उसने पिरोया है। चाँदनी तो बहाना मात्र है, वास्तव में तो कवि का हृदय चाँदनी में कैसे करवटें लेता है, वही कवि ने दिखाया है।

लगभग पचास गीत चाँदनी पर लिखे गये हैं। सभी कवियों ने चाँदनी पर रचना की है, किन्तु किसी एक कवि ने केवल चाँदनी पर इतना लिखा हो, इन रचनाओं के अतिरिक्त देखने में नहीं आया। प्रत्येक रचना चाँदनी का एक चित्र है। जिस प्रकार केलेडिएस्कोप को घुमाते जाइए और एक से एक सुन्दर रूप दृष्टि के सामने आते जायेंगे, उसी प्रकार वही चाँदनी, आँखों के सामने भिन्न-भिन्न मन-मोहक रूप में हम पाते हैं। यद्यपि विषय एक चाँदनी ही है तथापि भावों का पिष्टपेषण नहीं हुआ है। एक ही चित्र उलट-पुलट कर दूसरी बार नहीं आया है। चित्रों में सजीवता तो है ही, गति भी है। चाँदनी का स्वरूप यदि सजीव न हो तो कपास और चाँदनी में अंतर ही क्या

हो ! जिस प्रकार चाँदनी की प्रत्येक किरण में सुधा बरसती है, उसी प्रकार प्रत्येक गीत में उर को स्पर्श करनेवाला एक चित्र है । चाँदनी का हास कवि यों देखता है ---

किरण-वृन्तों पर सुनहरी
कुंद सित घन पाँत फहरी
नखत-मणियाँ, ओस-कणियाँ
पवन पिंग पराग-लहरी
हँस रही हिम के हिमावृत कुञ्ज में मानो दुपहरी
पीत रवि, छवि शीत चन्द्र-प्रकाश-सी
चाँदनी हिम-हास-सी

दूसरे स्थान पर कवि चाँदनी बाला से फूल चुनवाता है और उसका यों वर्णन करता है ---

नवमृणाल-से भुज लचकीले
नभ-वेणी बंधन से ढीले
झरते तारक-कुसुम रँगीले
देख रही मुख-आभा अपनी ओसों के दर्पण में
चाँदनी फूल चुन रही वन में

गुलाब तरुणाई तथा सौंदर्य का कवि है । यौवन की रसीली भावनायें अनायास ही उसके भावों में फूट पड़ती है । इसलिए चाँदनी का आलंबन लिये कवि का तरुण हृदय रस से छलकता जाता है और भावनाओं की विशेषता यह है कि वह साकार रँगीले चित्र-सी आँखों के सामने खड़ी हो जाती है । ऊपर के दोनों अवतरणों से यह स्पष्ट हो जाता है । एक छंद में कवि कहता है ---

मुख पर झीना अंचल खींचे
सकुच नयन-पंखुडियाँ मीचे
खड़ी आम्र के तरु के नीचे
हँसती हुई मिली
चाँदनी वन के बीच खिली

इन रचनाओं की विशेषता यह है कि शब्दों की चित्रावली मानस-फलक पर रेखा का चित्र भी बन जाती है। कहीं-कहीं चित्रों में अनोखापन भी आ गया है ---

शशि विटप पर मोर बाँका
उड़ी सित तारक-बलाका
सजल धरणी, कुमुद झरते
मास पावस का, न राका
श्याम मेघों में चमककर हो गयी थिर दामिनी
आज राका-यामिनी

कवि के हाथों में शब्द नाचते हुए आते हैं। मधुराई और सुघराई दोनों ही इन रचनाओं में पाई जाती है ---

सित घन-फेनोच्छवसित हासमय
उर्मि-निलय मधु-मलय-लासमय
तारक शत बुद्-बुद्, विलासमय
रुद्ध ज्वार, दिशि कूल डुबाती लो फिर लौट पड़ी
ज्योत्स्ना रजत-सिन्धु सी उमड़ी

किसी भी स्थल पर, न भाषा की, न भाव की शिथिलता आने पायी है। सरस साहित्य की रचनाओं में मैं इसका स्वागत करता हूँ। साहित्य-प्रेमियों को यह अवश्य रुचिकर होगी और कवि के ही शब्दों में कहूँगा ----

'कुछ दिनों में देखना इसकी मधुरता मीत'

--- कृष्णदेव प्रसाद गौड़
(बेढब बनारसी)